



Hargharpanditji

॥ गुरुवार व्रत कथा ॥
॥ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ गुरुवार व्रत कथा ॥

प्राचीन समय की बात है। एक नगर में एक राजा अपनी रानी के साथ सुखपूर्वक रहता था। राजा बहुत दानी, धार्मिक और प्रजापालक था। वह प्रतिदिन ब्राह्मणों और जरूरतमंदों को दान देता तथा भगवान विष्णु की पूजा करता था।

राजा की रानी भी धार्मिक थी, लेकिन उसे धन और वैभव का बहुत अभिमान था। एक दिन बृहस्पति देव साधु का रूप धारण करके राजा के महल में भिक्षा मांगने आए। उस समय रानी अपने काम में व्यस्त थी। उसने साधु का उचित सम्मान नहीं किया और उन्हें बिना भिक्षा दिए ही वापस भेज दिया।

बृहस्पति देव ने रानी के व्यवहार से दुखी होकर मन ही मन कहा कि अहंकार के कारण इसके घर की समृद्धि कम हो जाएगी।

कुछ समय बाद राजा के राज्य में कठिन परिस्थितियां आने लगीं। धन-संपत्ति धीरे-धीरे समाप्त होने लगी और राजपरिवार को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा। राजा ने अपने एक विद्वान गुरु से इसका कारण पूछा।

गुरु ने बताया कि बृहस्पति देव की अवहेलना और धर्म-कर्म में कमी के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई है। उन्होंने राजा और रानी को गुरुवार का व्रत करने, भगवान विष्णु और बृहस्पति देव की पूजा करने तथा जरूरतमंदों को पीली वस्तुओं का दान करने की सलाह दी।

राजा और रानी ने श्रद्धापूर्वक गुरुवार का व्रत आरंभ किया। वे प्रत्येक गुरुवार को प्रातः स्नान करके पीले वस्त्र धारण करते, भगवान विष्णु और बृहस्पति देव की पूजा करते तथा पीले फूल, चने की दाल, गुड़ और केले का भोग लगाते।

वे "ॐ बृं बृहस्पतये नमः" मंत्र का जाप करते और गरीबों तथा ब्राह्मणों को भोजन एवं दान देते।

धीरे-धीरे राजा के जीवन में परिस्थितियां बदलने लगीं। राज्य में सुख-शांति लौट आई, व्यापार और धन-संपत्ति में वृद्धि होने लगी तथा परिवार में फिर से प्रसन्नता आ गई।

रानी को अपनी भूल का एहसास हुआ। उसने अपना अहंकार त्याग दिया और जीवनभर धर्म, दान, सेवा तथा भगवान की भक्ति करने का संकल्प लिया।

बृहस्पति देव उनकी श्रद्धा और पश्चाताप से प्रसन्न हुए और उन्हें आशीर्वाद दिया।

उन्होंने कहा—

"जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक गुरुवार का व्रत करता है, भगवान विष्णु का स्मरण करता है, गुरुजनों का सम्मान करता है और अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान-पुण्य करता है, उसके जीवन में सद्बुद्धि, धर्म, सुख और समृद्धि की वृद्धि होती है।"

इसके बाद राजा और रानी ने नियमित रूप से गुरुवार का व्रत और भगवान विष्णु की आराधना की तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत किया।

गुरुवार व्रत कथा का फल

जो भक्त श्रद्धापूर्वक गुरुवार व्रत करता है और कथा सुनता या पढ़ता है, उसे भगवान विष्णु और बृहस्पति देव की कृपा प्राप्त होने की धार्मिक मान्यता है। जीवन में ज्ञान, सौभाग्य, सुख-समृद्धि और पारिवारिक शांति की प्राप्ति के लिए यह व्रत किया जाता है।

॥ बृहस्पति देव की जय ॥

॥ श्रीहरि विष्णु भगवान की जय ॥